Swar Sindhu: National Peer-Reviewed/Refereed Journal of Music
A UGC CARE listed Journal
ISSN 2320–7175 | Volume 11, Issue 01, January-June, 2023
http://swarsindhu.pratibha-spandan.org © The Author(s) 2023

उत्तराखण्ड का पारंपरिक लोकगीत 'हुड़किया बौल'

REETA PANDEY[1], BHASHKER DATT KAPRI[2] & DR. GAGANDEEP HOTHI[3]

[1]Research Scholar, Department of Music, D.S.B Campus, Kumaun University, Nainital
[2]Research Scholar, Department of Music, D.S.B Campus, Kumaun University, Nainital
[3]Assistant Professor, Department of Music, D.S.B Campus, Kumaun University, Nainital

शोध सार

उत्तराखण्ड एक पर्वतीय राज्य है और पर्वतीय क्षेत्र का जनजीवन कृषि पर आधारित है। यह हमेशा से ही अपनी सांस्कृतिक धरोहर के लिए विख्यात है। यहाँ पूरे साल भर तीज, त्यौहार, मेले, धार्मिक-अनुष्ठान, पूजा-पाठ, रीति-रिवाज, आदि मांगलिक कार्यों का आयोजन होता रहता है। इन सभी मांगलिक कार्यों में हमारी पारंपरिक लोक कलाओं का अद्भुत स्वर-ताल का सामंजस्य देखने को मिलता है। यहाँ की लोक गाथाओं - हरूहीत, राजुला-मालूशाही आदि, लोक आख्यानों - जागर, भड़ौ आदि, लोकगीतों - न्योली, चाँचरी, छपेली, हुड़किया बौल आदि में यहाँ की संस्कृति के विविध आयाम जैसे - हमारे मूल्य, संस्कार, जीवन-दर्शन, रीति-रिवाज, प्रथायें, सभ्यता-संस्कृति आदि परिलक्षित होते है। ग्रामीण परिवेश के दैनिक कार्यों ने हमारी लोक परंपराओं को जीवित ही नहीं अपितु समृद्ध भी किया है। प्रस्तुत शोध पत्र में उत्तराखण्ड का पारंपरिक लोकगीत 'हुड़किया बौल' को कई पहलूओं से दिखाने का प्रयास किया गया है। 'हुड़किया बौल' कुमाऊँ में रोपाई, गुड़ाई व निराई के अवसर पर गाया जाने वाला कृषि प्रधान गीत है। इसे श्रमगीत भी कहा जाता है। यहाँ पर हुड़किया बौल की व्याख्या करने से पहले 'हुड़क' तथा 'हुड़किया' को जानना अति महत्वपूर्ण है।

मुख्य शब्द - हुड़का, हुड़किया बौल, लोकगीत, योग, जौंया, भूमिया, उज्जर।

हुड़का

यह उत्तराखण्ड राज्य का बहुत ही प्राचीन एवं पारंपरिक लोकवाद्य है। इस लोकवाद्य का प्रयोग लोकसंगीत की सभी विधाओं में होता है। स्थानीय बोली में इसे 'हुडुक' कहा जाता है। इसका खोल बनाने के लिए खिन, गेठी आदि की लकड़ी का प्रयोग किया जाता है।[1] लकड़ी से बने इस खोल के दोनों सिरों पर बकरी की खाल की पूड़ी लगाई जाती है जिसे स्थानीय कलाकार 'उज्जर' के नाम से पुकारते हैं। पूड़ी के चारों ओर एक विशेष प्रकार की लकड़ी गोले के आकार में लगाई जाती है जिसे 'कुन्याव' कहा जाता है।[2] तत्पश्चात् इसी कुन्याव पर कील आदि से छः या सात छिद्र किये जाते हैं तथा प्रत्येक छिद्र पर कुण्डलनुमा धागा बाँधा जाता है। दायें व बायें सिरे के कुण्डलनुमा धागों को परस्पर एक-दूसरे से पुनः किसी बड़ी डोरी से मिला दिया जाता है। अंत में इसे कंधे पर टिकाये रखने के लिए तथा इसे सुरक्षित रखने के उद्देश्य से इस पर बैल्टनुमा कपड़े की पट्टी लगा दी जाती है। कुछ लोग इस पर घुंघरु भी बाँधते हैं। इस प्रकार एक हुड़के के निमार्ण में 10 से 15 दिन का समय लग जाता है। इस वाद्य को बजाने के लिए कलाकार अपने बायें हाथ से हुड़का पकड़ता है व दायें हाथ से हुड़के पर थाप देता है। कंधे पर कसी डोरी के संचालन से हुड़के की ध्वनि में परिवर्तन होता है। हुड़के से निकलने वाली ध्वनि बहुत ही मधुर व हृदयस्पर्शी होती है।

हुड़किया

कुमाऊँ में प्रचलित 'हुड़किया' शब्द का तात्पर्य ऐसे व्यक्ति से है जो अपने जीविकोपार्जन हेतु मांगलिक अवसरों, ऋतुउत्सवों, मेलों आदि शगुन कार्यों में हुडुका बजाते हुए प्रसंगवश लोकगीतों को अपनी स्थानीय बोली में गाता है।[3] इसके अतिरिक्त यह कत्यूर वंश के शासकों से जुड़ी लोकगाथाओं, गाथागीतों, आदि को लोकधुनों में गाकर कार्य करने वाले कृषकों व श्रमिकों को स्फूर्ति और उमंग से भर देता है। फल स्वरुप खेतों में कार्य करने वाले लोग हँसी-खुशी अपना कार्य करते हैं। इन लोकगीतों में केवल हुड़किया ही नहीं उसके साथ भाग लगाने वाली महिलाओं का भी बहुत बड़ा योगदान है। महिलाओं द्वारा कार्य करते हुए गायी जाने वाली विधायें अतुलनीय हैं। ये हुड़किया व महिलाऐं वास्तव में हमारी कुमाऊँनी संस्कृति के आधार हैं। इनके गीतों में लोकरंगों के साथ-साथ लोक संवेदनाओं, प्रेम, पीडा, उद्वेग, वेदना आदि का मर्म नैसर्गिक रुप में झलकता है।

Swar Sindhu: National Peer-Reviewed/Refereed Journal of Music
A UGC CARE listed Journal
ISSN 2320–7175 | Volume 11, Issue 01, January-June, 2023
http://swarsindhu.pratibha-spandan.org © The Author(s) 2023

हुड़किया बौल

हुड़किया बौल दो शब्दों के मेल से बना है- 'हुड़कि' और 'बौल'। 'हुड़कि' का अर्थ 'हुड़ुक' (गौमुख आकार का लोकवाद्य) तथा 'बौल' का अर्थ 'श्रम' से है अर्थात् कहा जा सकता है कि इसमें कार्य संगीतमय वातावरण में बिना थकान के सम्पन्न होता है। इसे धान-रोपाई के अवसर पर तथा मडुवे की गुड़ाई व निराई में भी हुड़के के साथ गाया जाता है। हुड़किया बौल गायक, 'हुड़किया' कहलाता है। हुड़किया बौल को हिन्दी में 'कार्य गीत' या 'साभिनय गीत' तथा अंग्रेजी में इसे 'एक्शन सौंग', कहा जाता है।[4] सर्वप्रथम हुड़किया अपने ईष्ट देवता, भूमि देवता, पंच कोटि देवता तथा पृथ्वी व स्वर्ग के देवताओं की गाथाओं, प्रेमगाथाओं को गाता हुआ कार्य के मध्य में वीर गाथाओं का गान करता है। इसमें हुड़किया गीत की प्रथम पंक्ति को गाता है जिसे सभी रोपाई लगाने वाली ग्रामीण महिलाऐं दोहराती हैं या भाग लगाती हैं। लय तथा गायन के साथ कार्य करते रहने से थकान का आभास नहीं होता तथा समय का भी सदुपयोग होता है। यह कार्य गोधुली बेला तक चलता है। प्रायः हुड़किया बौल या धान की खेती उत्तराखण्ड के कई क्षेत्रों में की जाती है जिनमें मुख्यतः घाटी क्षेत्र प्रमुख हैं, जैसै-पिथौरागढ़ में सोर घाटी, बागेश्वर में कत्यूर घाटी, सोमेश्वर में बैजनाथ घाटी, चैखुटिया में गेवाड़ घाटी, आदि।[5]

व्यवहारिक पक्ष

उत्तराखण्ड के पर्वतीय अंचल में आषाढ़ के महीने में बारिश के साथ ही खेतों में रोपाई का काम शुरू हो जाता है। हुड़किया बौल सिंचाई और श्रम पर आधारित कार्य है अतः जल और श्रमिकों की उचित व्यवस्था के बाद ही हुड़किया बौल का आयोजन किया जाता है। कार्य के एक दिन पहले ही जिस खेत में रोपाई होनी होती है उसे पर्याप्त पानी से भर दिया जाता है। तत्पश्चात् दूसरे दिन प्रातः उठकर सर्वप्रथम घर के सभी सदस्य अपने ईष्ट देवता, भूमिया देवता के मंदिर जाते हैं और पूरे विधि-विधान से पूजन करते हैं। फिर जिस खेत में हुड़किया बौल आयोजित होता है उसमें भूमि पर नारियल फोड़ा जाता है, खेत की मेढ़ पर धूप जलायी जाती है तथा पिठ्या, चंदन, अक्षत व भेंट चढ़ाकर भूमि को प्रणाम किया जाता है और भूमिया से कामना की जाती है कि हमारी खेती-पाती खूब हरी-भरी हो जिससे अन्न की कमी न हो। यही कारण है कि हम कोई भी कार्य शुरू करने से पहले भगवान का नाम लेते हैं चाहे वह श्रम का कार्य हो या अन्य मांगलिक कार्य। यहाँ पर हमारे समाज की आस्था, परंपरा, संस्कार, मान्यतायें, मर्यादायें व हमारी पूरी संस्कृति का प्रभाव भी दिखाई पड़ता है।

प्राकृतिक रुप से पहाड़ों में धान की रोपाई बरसात अथवा जून-जुलाई के माह में की जाती है और इस समय वर्षा बहुतायत में होती है जो धान की फसल के लिए महत्वपूर्ण कारक है। वर्षा से बचाव हेतु ग्रामीण लोग मौंढ़ ओढ़कर रोपाई लगाते हैं।[6] हुड़किया बौल में रोपाई लगाने वाली अधिकतर महिलायें ही होती हैं जो पंक्तिबद्ध होकर एकसार एक सुर में कार्य करती हैं। इसमें वौल्ट-पौल्ट (कार्य का आदान-प्रदान) सामूहिक रूप से देखने को मिलता है, जो आपसी भाइचारे की भावना को दर्शाता है। हुड़किया बौल लगाते हुये गाँव में एक परंपरा यह भी है कि कार्य के मध्य में सभी रोप्यारों के लिए भोजन खेतों के बीच में ही पहुँचाया जाता है और सभी जाति-वर्ग के लोग इसे एक साथ बैठकर प्रसाद स्वरूप ग्रहण करते हैं। अतः एक तरह से यह लोकगीत सामूहिक एकता के प्रतीक को उजागर करता है जो वर्तमान परिपेक्ष्य में कम होता जा रहा है। रोपाई के बाद जो खेत की मेढ़ होती है उसे मिट्टी से लिपा जाता है तत्पश्चात् उस पर उड़द (मास) और भट्ट के बीज बोये जाते हैं। इस प्रकार से भूमि का सदुपयोग भी देखने को मिलता है। आखिर में कार्य जब समाप्ति की ओर होता है तो हुड़किया सभी लोगों को शुभाषीश वचनों के साथ आशीर्वाद देकर विदा करता है।[7] वर्तमान परिपेक्ष्य में जंगली जानवरों के आतंक के कारण खेती प्रभावित हुई है। श्रम का स्वरूप बदल रहा है। आधुनिक उपकरणों और पाश्चात्य संस्कृति के प्रभाव के चलते भी हमारी पारंपरिक कृषि अब बहुत कम देखने को मिल रही है।

Swar Sindhu: National Peer-Reviewed/Refereed Journal of Music
A UGC CARE listed Journal
ISSN 2320–7175 | Volume 11, Issue 01, January-June, 2023
http://swarsindhu.pratibha-spandan.org © The Author(s) 2023

वैज्ञानिक पक्ष

संगीत एक एसी विधा है जो मनुष्य को भीतर से आन्नदित कर देती है। संगीत और श्रम जब एक साथ होता है तो स्वयं ही मन प्रफुल्लित और शरीर व्याधियों से मुक्त हो जाता है। हम देखते हैं कि भले ही गाँव में आधुनिकता के साधन सुलभ नहीं हैं लेकिन यहाँ का पर्यावरण आज भी शारीरिक स्वास्थ्य तथा मानसिक शांति के लिए अत्यधिक उपयुक्त है। इसके विपरीत शहरों में सारे संसाधन होने के बावजूद भी यहाँ के लोगों का स्वास्थ्य ग्रामीण लोगों की अपेक्षा दुर्बल रहता है। ग्रामीण परिवेश की इस स्वस्थता का कारण योग और संगीत है, जो गाँव के दैनिक कार्यों में परिलक्षित होता है। यही कारण है कि गाँव के बुजुर्ग दीर्घ आयु तक स्वस्थ और संगीतमय जीवन व्यतीत करते हैं। ग्रामीण लोगों की स्वस्थता का कारण उनके रोजमर्रा के कार्यों में 'योग' तथा 'संगीत' का प्रभाव है। सभी कार्य एक लय में चलते हैं जो संगीत का प्राथमिक तत्व है तत्पश्चात् सम्पूर्ण शारीरिक संचालन के द्वरा कार्य निष्पादित होता है, जो स्वयं में 'योग' है। यहाँ पर यह कहना बिल्कुल सत्य होगा कि स्वस्थ रहने के लिए योग और संगीत स्वयं में औषधि-रहित चिकित्सा है,' जिसे हम ग्रामीण परिवेश के प्रत्येक कार्यों में भली-भाँति देख सकते हैं। कुमाऊँ के पर्वतीय व ग्रामीण अंचलों में आज भी हुड़किया बौल जैसे पारंपरिक लोकगीतों व श्रमगीतों का चलन दिखाई देता है। इन गीतों में हुड़किया हुड़के की थाप पर लोकगीत तथा लोकगाथायें सुनाता है। ऐसा करने से वह स्वयं तो आनंदित रहता ही है साथ ही अपने आस-पास उपस्थित सभी श्रमिकों को आन्नदविभोर कर असीम उर्जा से भर देता है।

सांगीतिक पक्ष

हुड़किया बौल हमारे लोक की एसी विधा है जो स्वयं में पूर्ण रूप से संगीतमय, लयात्मक तथा सामूहिक एकता का प्रतीक है। यह गीत मुख्यतः चार भागों में गाया जाता है: 1- आहवान गीत, 2-प्रार्थना गीत, 3-गीत का विषय, 4-मंगलकामना या आशीर्वाद।[9] हुड़किया बौल का सम्बन्ध भूमि से है अतः इस कार्य को 'भूमिया गीत' के साथ शुरू किया जाता है जिसे कार्य में मग्न महिलायें भी पूरे सुर और ताल में सामूहिक रूप से गाती हैं। इस गीत में देवताओं का आहवान किया जाता है। भूमिया गीत की प्रथम पंक्ति के अंत में 'रे' तथा दूसरी पंक्ति के अंत में 'हो' की टेक लगाई जाती है जो इस प्रकार है -

देवा ओ देवा भूमिया रे भूमिये देवा, देवा दैणा है जाया रे ऽ ऽ ऽ ऽ

देवा ओ देवा भूमिया रे भूमिये देवा, देवा सुफल है जाया हो ऽ ऽ ऽ ऽ

देवा ओ देवा भूमिया रे भूमिये देवा, देवा सुफल बोलिया रे[10] ऽ ऽ ऽ ऽ

भूमिया गीत के बाद हुड़किया कई प्रकार के लोकगीत जैसे- झोड़ा, छपेली, न्योली आदि को मधुर स्वरों में गाता हुआ उत्तराखण्ड की लोकगाथाओं की तरफ बढ़ता है। वीरगाथाओं में वह हरूहीत, राजा बिरमदेव व कत्यूरी राजाओं की गाथाओं को वीर रस के साथ गाता हुआ सभी श्रमिकों को अपार साहस से भर देता है। अत्यधिक प्रसिद्ध राजुला-मालूशाही की प्रेमगाथा का वर्णन भी इस हुड़किया बौल में सुनने को मिलता है। हुड़किया बौल में गाया जाने वाला झोड़ा इस प्रकार है-

झोड़ा

दुलि माया दारा वै दुलि चल चैकोटा, नी आनौ नी आनौ हो भिना त्यर चैकोटा

झुंगर को भात वै खाली म्यर चैकोटा, गौहोते की दाल वै खाली म्यर चैकोटा

छाजा में भै रौलि वै दुलि म्यर चैकोटा, दुलि माया दारा वै दुलि चल चैकोटा11

अंत में हुड़किया सभी को शुभाशीष वचनों के साथ अपनी स्थानीय बोली में आशीर्वाद देते हुये कहता है-

Swar Sindhu: National Peer-Reviewed/Refereed Journal of Music
A UGC CARE listed Journal
ISSN 2320–7175 | Volume 11, Issue 01, January-June, 2023
http://swarsindhu.pratibha-spandan.org © The Author(s) 2023

जी रैया जागी रैया खूब फलिया फूलिया, तुम हर साल यौं रौंपे लगाते रैया

तुमर नानतिन जी रैं जागी रैं, बरसा-बरस हम लोग हर साल इसी के मिलते रूल[12]

''हुड़कि बौल गीत''

घम घमा बाजैछौ, जौंया हुड़ुकि

घम घमा बाजैछौ, जौंया हुड़ुकि

कै देवा छाजैछौ, जौंया हुड़ुकि

भूमि का भूम्याला, जौंया हुड़ुकि

कै देवा छाजैछौ, जौंया हुड़ुकि

पंचनाम बाजैछौ, जौंया हुड़ुकि

कै देवा छाजैछौ, जौंया हुड़ुकि

ईष्ट देवा बाजैछौ, जौंया हुड़ुकि

घम घमा बाजैछौ, जौंया हुड़ुकि

घम घमा बाजैछौ, जौंया हुड़ुकि

उपर्युक्त लोकगीत में 'जौंया हुड़ुकि' का उल्लेख हुआ है जिसमें 'जौंया' का अर्थ 'जोड़े' से है, अर्थात् हुड़किया बौल गीत दो हुड़कों के साथ गाया जाता होगा।[14] इस गीत के माध्यम से यह आभास होता है कि पहले संयुक्त परिवार के द्वारा खेती बहुत बड़े भूभाग में की जाती थी जिससे हमारी पारिवारिक एकता का भी बोध होता है। चूँकि शास्त्र का जन्म लोक से हुआ है। अतः कहा जा सकता है कि यह लोकगीत 'राग पहाड़ी' के अत्यधिक समीप लगता है। इस गीत में 'राग दुर्गा' का अंश भी दिखता है। लोक में यह गीत कुमाऊँ के पारंपरिक लोकवाद्य 'हुड़ुक' के साथ गाया जाता है। यह गीत छः मात्राओं में निबद्ध है जिसे शास्त्रीय संगीत में तबले पर भी गाया जा सकता है। आगे हुड़कि बौल गीत की स्वरलिपिबद्ध रचना प्रस्तुत है-

स्वरलिपि

ताल चिन्ह	X			0		
मात्राऐं	1	2	3	4	5	6
	मप	ध	प	म	रे	म
	घम	घ	मा	बा	जै	छौ
	ध	-	-	सां	ध	धप
	जौं	या	ऽ	हु	ड़ु	कि

Swar Sindhu: National Peer-Reviewed/Refereed Journal of Music
A UGC CARE listed Journal
ISSN 2320–7175 | Volume 11, Issue 01, January-June, 2023
http://swarsindhu.pratibha-spandan.org © The Author(s) 2023

मप	ध	प	म	रे	म
घम	घ	मा	बा	जै	छौ
प	-	-	-	-	-
जौं	या	ऽ	हु	ड़ु	कि
मप	ध	प	म	रे	म
कै	दे	वा	छा	जै	छौ
ध	-	-	सां	ध	धप
जौं	या	ऽ	हु	ड़ु	कि
मप	ध	प	म	रे	म
भू	मि	का	भू	म्या	ला
प	-	-	-	-	-
जौं	या	ऽ	हु	ड़ु	कि
मप	ध	प	म	रे	म
कै	दे	वा	छा	जै	छौ
ध	-	-	सां	ध	धप
जौं	या	ऽ	हु	ड़ु	कि
मप	ध	प	म	रे	म
पंच	ना	म	बा	जै	छौ

Swar Sindhu: National Peer-Reviewed/Refereed Journal of Music
A UGC CARE listed Journal
ISSN 2320–7175 | Volume 11, Issue 01, January-June, 2023
http://swarsindhu.pratibha-spandan.org © The Author(s) 2023

प	-	-	-	-	-
जौं	या	ऽ	हु	ड़ु	कि
मप	ध	प	म	रे	म
कै	दे	वा	बा	जै	छौ
ध	-	-	सां	ध	धप
जौं	या	ऽ	हु	ड़ु	कि
मप	ध	प	म	रे	म
ईष्ट	दे	वा	छा	जै	छौ
प	-	-	-	-	-
जौं	या	ऽ	हु	ड़ु	कि
मप	ध	प	म	रे	म
घम	घ	मा	बा	जै	छौ
ध	-	-	सां	ध	धप
जौं	या	ऽ	हु	ड़ु	कि
मप	ध	प	म	रे	म
घम	घ	मा	बा	जै	छौ

Swar Sindhu: National Peer-Reviewed/Refereed Journal of Music
A UGC CARE listed Journal
ISSN 2320–7175 | Volume 11, Issue 01, January-June, 2023
http://swarsindhu.pratibha-spandan.org © The Author(s) 2023

प	-	-	-	-	-
जौं	या	ऽ	हु	ड़ु	कि

निष्कर्ष

ग्रामीण परिवेश में आज भी प्रत्येक शुभ कार्यों में सर्वप्रथम भूमिया तथा अपने इष्ट देव का पूजन किया जाता है। हमारी संस्कृति में हुड़किया बौल के अतिरिक्त बहुत से ऐसे कार्य हैं जिनमें केवल संगीत ही नहीं अपितु शारीरिक योग की मुद्रायें भी पाई जाती हैं जो स्वास्थ्य लाभ हेतु अत्यधिक अनुकूल हैं। योग तथा लोकसंगीत का अद्भुत संगम हमारी संस्कृति को और भी अधिक सुदृढ़ बनाता है। कार्यों के साथ-साथ लय व गीत का प्रयोग थकान को तो मिटाता ही है और साथ ही हमारे लोक संगीत को भी जन्म देता है। यही लोक संगीत हमारी ग्रामीण तथा भारतीय संस्कृति को दर्शाता है। अतः निश्चित तौर पर कह सकते हैं कि हमारे देश का सर्वांगीर्ण विकास तथा उन्नति हमारे गाँवों तथा यहाँ की उन्नति पर ही निर्भर है। वास्तव में कहना चाहिए कि धरती माता की पूजा तो सर्वप्रथम हमारी संस्कृति के आधार 'किसान' ही करते हैं। इसके साथ ही वह हमारी थाती को भी सहेजे हुये है फिर चाहे वह पारंपरिक परिधान हो या पारंपरिक रीति-रिवाज। इन्हीं लोकपरंपराओं से हमारी लोक कला समृद्व हुई है।

लोकगीतों को संरक्षित रखने में लोककलाओं का बहुत बड़ा योगदान है। हमारे सम्पूर्ण संगीत का आधार हमारी लोक परंपरायें ही हैं। अगर यह इसी तरह खत्म होती रही तो वह समय दूर नहीं जब हमारे पास हमारा कहने के लिए पश्चाताप के अतिरिक्त कुछ भी शेष नहीं रहेगा। अतः विलुप्त होती हमारी संस्कृति के संरक्षण के लिए लोक गायकों का संरक्षण भी बहुत आवश्यक है। इनको उचित मान-सम्मान मिलना चाहिए। आकाशवाणी, दूरदर्शन तथा कार्यकमों के माध्यम से हमारे लोक कलाकारों को पहचान मिलनी चाहिए, जिसके हकदार सिर्फ यही लोक कलाकार हैं। लोक गायकों द्वारा गायी जाने वाली लोक विधाओं जैसे- भगनौल, चाँचरी, हुड़किया बौल आदि को पहचानने की आवश्यकता है। इनकी विधाओं का आडियो-विडियो रिकार्ड संग्रहित कर इन्हें सुरक्षित करने की आवश्यकता है। यह हम सभी का दायित्व भी बनता है कि हम सभी अपने-अपने स्तर से अपनी कला व संस्कृति को अपनायें तथा इसे संरक्षण व संवर्धन प्रदान करें।

सन्दर्भ ग्रंथ

1 श्री आर्या, जसीराम, सांस्कृतिक धरोहर-संकलनकर्ता, साक्षात्कार के आधार पर, 2021, आडियो संकलन, ग्राम-दन्तोला, चैखुटिया, अल्मोड़ा।
2 श्री आर्या सुनील, हुड़का वादक, साक्षात्कार के आधार पर, 2021, आडियो-विडियो संकलन, ग्राम-जमणिया, चैखुटिया, अल्मोड़ा।
3 प्रो0 शर्मा, डी0 डी0, 'उत्तराखण्ड़ ज्ञानकोष', अंकित प्रकाशन, 2014, पृ0-699
4 प्रो0 शर्मा, डी0 डी0, 'उत्तराखण्ड़ ज्ञानकोष', अंकित प्रकाशन, 2014, पृ0-699
5 श्री आर्या, जसीराम, सांस्कृतिक धरोहर-संकलनकर्ता, 2021, साक्षात्कार के आधार पर, आडियो संकलन, ग्राम-दन्तोला, चैखुटिया, अल्मोड़ा।
6 श्री जोशी, मोहन, साहित्यकार, साक्षात्कार के आधार पर, 2021, आडियो संकलन, गरुड़, बागेश्वर।
7 डा0 पोखरिया, देव सिंह, 'कुमाऊँनी लोक गीतों में छंद योजना', 2005, पृ0-231
8 गर्ग, लक्ष्मी नारायण, सम्पादक 'निबन्ध संगीत', 1989, पृष्ठ-627
9 प्रो0 शर्मा, डी0 डी0, 'उत्तराखण्ड़ ज्ञानकोष', अंकित प्रकाशन, 2014, पृ0-700

Swar Sindhu: National Peer-Reviewed/Refereed Journal of Music
A UGC CARE listed Journal
ISSN 2320–7175 | Volume 11, Issue 01, January-June, 2023
http://swarsindhu.pratibha-spandan.org © The Author(s) 2023

10 श्री बोरा, सुरेश सिंह, लोक गायक, साक्षात्कार के आधार पर, 2021, आडियो संकलन, ग्राम-दुधलिया बिष्ट, चैखुटिया, अल्मोड़ा।

11 श्री राम, भवानी, लोक गायक, साक्षात्कार के आधार पर, 2020, आडियो संकलन, ग्राम-ग्वाली आगरनौला, चैखुटिया, अल्मोड़ा।

12 श्री आर्या, जसीराम, सांस्कृतिक धरोहर-संकलनकर्ता, साक्षात्कार के आधार पर, 2021, आडियो संकलन, ग्राम-दन्तोला, चैखुटिया, अल्मोड़ा।

13 श्रीमती पाण्डे, गीता, लोक गायिका, साक्षात्कार के आधार पर, 2021, आडियो सहित, रामनगर, नैनीताल।

14 श्री आर्या, जसीराम, सांस्कृतिक धरोहर-संकलनकर्ता, साक्षात्कार के आधार पर, 2021, आडियो संकलन, ग्राम-दन्तोला, चैखुटिया, अल्मोड़ा।